अडिल्ल—ऐरापत गज वृषभ सुपेद सुजानिये,
सिंघ पहुप की माल लछिम हित दानिये ।
पूरन ससि रवि कुंभ दोय सुभ देपिया,
मच्छ जुगल जल थान केलि जुत पेपिया ॥ ४ ॥

पद्धरीछन्द—सरवर कमलन करि पूर्न जोय, जलरासि समुद्र फिर लष्यो सोय ।
सिंहासन सुरग विमान जान, धरणेंदर देष्यो जान मान ॥५॥

गीता छन्द—रतन रासि निहार अगनी धूम विन जोई सही ।
ये सुपन लपि मा हरप पायौ फेरि जिन जनमे सही ॥
वधि तरन पुन तप ठानि अघ हारि ज्ञान केवल पाय है ।
तव होय अतिसय नाम सुनि अव जनम ते दस थाय है ॥६॥

छन्द वेसरी—तव होय दस जिन लहै सु ज्ञानो, चौदह अतिसय सुरकृत मानो ।

आठ प्रतिहारज सुभ होवै, अंनत चतुष्टै सब मल षोवै ॥७॥

चाल छन्द—ये छयालिस गुन जुत देवा, विचरै संग द्वादस भेवा।
छवि देषि समोसर्न केरी, हरि सुर पूजैं करि फेरी ॥८॥

चाल जोगीरासेकी—फेरि सिद्ध गुन आठजु पाये, आठ करम ही जारे।
होय निरंजन चेतन मूरति लोक सिषिर थिति थारे ॥
आचारज गुन धार छतीसो सुनि तिन कथा सोहाई।
दसधा धर्म तप द्वादस गाये पंच अचार सुभाई ॥९॥

जिनजय फी चाल—गुपति तीन षट आवसी सब मिलि होय छतीसा जी।
बहु श्रुत गुन पचीस हैं अंग पूरब सब पूराजी ॥बहु श्रुत पूजों भावसो॥
वीस आठ गुन साधके तहां पंच महाव्रत साराजी। पंच सुमति
पंच अंषि दमैं षट आवासि भेद सुधारोजी॥ तेगुर अति सुषकार हैं॥१०॥

१. अक्ष—से इन्द्रिय।

कड़खा छन्द—भूमि सोवैं सदा मंजन ते ना करैं त्याग वस्त्र तनों सीस लुंचै।
पांय इक बार थिति सुभग ठानैं सदा दंत धोवन तजैं साध मानैं॥ ११॥

चाल सुनभाईरे की—

येही पंचगुरु पूजिये सुनि भाइरे जो चाहै भव पार। चेत मन भाईरे।
येही भव दधि नाव हैं सुनि भाइरे को पुन्नतें यह पाय॥ चेत मनभाईरे। १२।

कड़खा छन्द—येही परमेष्टी पाँच जग पूज्य हैं मोह सो सुभट इन हेरि मार्यो
शेप कर्म सात तव परे कस गिनति मैं मारि कै भवनमैं काज सार्यो॥
आप भव तिर गये और काढ़न भये धरि करुणा जगत जीव केरी।
येही दीनको तार संसार हर देव हैं मेटि हैं भगतकी जगत फेरी॥ १३॥

इति भक्ति स्तुति समाप्त।

अथ समुच्चय पूजा—(स्थापना चाल, पंच मंगलकी)

पंच परम गुरु सब सुखदाई, पूजो भविजन हरष बढ़ाई ।
तिनके पद सुर हरि नित्य सेवैं, पूरब अघ बन कों धौ देवैं ॥
देवैं जु वह्नि[1] सकल बनकूं और कहो कहा गाइये ।
ताके सुफल भव छांडि भवि जन मुकति रमणी पाइये ॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणः पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् आव्हाननम् ।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणः पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं परमब्रह्मणः पंचपरमेष्ठीजिनसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् ।

अथाष्टक ।

(चाल जोगी रासेकी)

झारी कनक सुघाट मनोहर निर्मल नीर भराई ।

---

१. वह्नि—अग्नि ।

जिन सिद्ध आचारज अरु बहुश्रुति साधु जजों हरषाई ॥१॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्व० ॥१॥

चंदन बावन निर्मल पानी घसिकर लेकर आई । जिन सि० ।

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व० ॥२॥

अक्षत नष सिप शुद्ध सुगंध सुभ नैनन को सुष दाई । जिन सि० ॥३॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो ऽक्षयपदप्राप्तायाक्षतान् निर्वपा० ॥३॥

सुर द्रुम पहुप सुगंध मनोहर, मोहत भृंग चित भाई । जिन सि० ॥४॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

षट रस जुत नैवेद्य पवित्तर, क्षुधा नासन लाई । जिन सिद्ध० ॥५॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

रतन दीप धरि थाल आरती हरपित चित ले भाई । जिन सि० ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे पंचपरमेष्ठिभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व० ॥६॥

दसधा धूप मिलाय अगिन मधि पेऊं अति उमगाई। जिन सि०॥७॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्योऽष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

श्रीफल लौंग सुपारी खारक सुर सिव फलदा भाई। जिन सि०॥८॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामी० ॥८॥

जल चंदन अक्षत पुह चरु ले दीप धूप फल दाई। जिन सि०॥९॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्योऽनर्घपदप्राप्तायार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अडिल्ल

अरहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु जी, येही पंच भव तार भव्य अघ मादजी।
पूजत सुर नर पगा मुक्त फल कारनै, ताते मैं भी जजों पाप हठ टारने १०

ॐ ह्रीं अर्हतादिपंचपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

अथ प्रत्येक गुण के प्रथक् २ अर्घ।

जन्म के दश अतिशय।

चौपाई--जनमत दस अतिसय जिन लेय, पूजे सुर नर हर्ष धरेय।

नाहि पसेव होय तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥१॥

ॐ ह्रीं पसेवरहितजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मल नहि होय तास तन मांहि, निरमल देह होय सुख दांहि ।
ये आतिसय जिन तन मे थांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥२॥

ॐ ह्रीं मलरहितान्वितजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

सहस थान सम चतुर जुहोय, और घाट कबहू नहि जोय ।
ये आतिसय जो जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥३॥

ॐ ह्रीं समचतुरसंस्थानान्वितजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

संहनन वज्र बृपभ जो होय, अदभुत माहिमा धारै सोय ।
ये आतिसय जिन जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥४॥

ॐ ह्रीं वज्रवृपभनाराचसंहनसहितजिनेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

होय सरीर सुगंध अपार, नासिक त्रिपै लुबध करतार ।

ऐसी सोभा अन्य न पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥५॥

ॐ ह्रीं सुगंधितशरीरसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

ऐसो रूप जिनेस्वर लहैं, कामदेव कोटिक छवि जहैं ।

ये अतिसय जनमत जो पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढाहिं॥६॥

ॐ ह्रीं महारूपातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

भले भले लक्षन सो जान, गुन अनेक तनी है पान ।

ये सुभ छवि सो जनमत पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि॥७॥

ॐ ह्रीं शुभलक्षणातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

जनमत ही तिनके तन होय, श्रोनित स्वेत वरन अवलोय ।

ये अतिसय धारै तन मांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि ॥८॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णश्रोणितातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

ऐसो वचन कहै मुख सोय, तिनको सुनि जन मोहित होय ।

मधुर मिष्ट वच अति सुख दाहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि९

ॐ ह्रीं मधुरवचनातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

ताके बल सम और न धाम, है बल अनंत जिनेश्वर ठाम ।

जनमत ही बल आतिसय पांहि, सो जिन पूजों अर्घ चढांहि।१०॥

ॐ ह्रीं अनंतबलातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

इति जननके दस अतिशय समाप्त ।

अथ केवल ज्ञानके दश अतिशय (अडिल्ल)

समोसरण जुत जहाँ जिनेश्वर थिति करैं,

तहं ते जोजन इक सत दुरभिख ना परै ।

ऐसो आतिसय केवल उपजे होय है,

ताके पद सुर नरा जजै मद खोय है ॥१॥

ॐ ह्रीं शतयोजनदुर्भिक्षनिवारकजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

तबजिन केवल लहैं गमन नभ में करैं,
देव असंख्या गैल भक्ति सुष उच्चरैं । ऐसो०ताके० ॥२॥

ॐ ह्रीं आकाशगमनातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

जिनवर जहाँ थिति करैं सदा हित दायजी,
तिस थानक नहिं कोय मारने पायजी ।ऐसो०ताके० ॥३॥

ॐ ह्रीं अदयाभावातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

देव नरा पसु षगा और कोढुठ तनी,
इनको उपसर्ग नाहिं वानि जिन इम भनी । ऐसो०ताके० ।४॥

ॐ ह्रीं उपसर्गरहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

क्षुधा अति दुष करै जगत इस वासि पर्यौ,
सो जिन कवल अहार पान सब परिहर्यौ । ऐसो० ताके०५

ॐ ह्रीं कवलाहाररहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

समोसरन तव देव जिनेस्वर थिति करैं, जब मुष दीसैं चार भवन को सुष करैं।
ऐसो अतिसय केवल उपजे होय है, ताके पद सुर नरा जजै मद खोय है॥६॥

ॐ ह्रीं चतुर्मुखविराजमानजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

प्राकृत संस्कृत देस सकल भाषा सही,
सव विद्या अधिपती सकल जानन मही। ऐसो० ताके०॥७॥

ॐ ह्रीं सकलविद्याधिपत्ययुतजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

पुद्गल तन आकार मूरती वन रह्यौ,
ताकी छाया नांहि होय अचरज भयौ। ऐसो० ताके०॥८॥

ॐ ह्रीं छायारहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

नष कच तन जो होय वँधन तिनको रह्यो,
है जैंसे ही रहैं एक गुण यह लह्यो। ऐसो० ताके०॥९॥

ॐ ह्रीं नखकेशवृद्धिरहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

नेतर का टिमकार नाहि भौं कच हलैं,

नासागर दिठ सदा काल जिन ध्रुवं तु लैं । ऐसो० ताके०

ॐ ह्रीं नेत्रभ्रूचपलतारहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

सोरठा-ये दस आतिसय सार, केवल उपजे जिन लहैं ।

सो जिन हैं भवतार, सेवौ भवि वसु द्रव्यतें ॥११॥

ॐ ह्रीं केवलज्ञानस्य दशातिशयसहितजिनेद्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ११

(इति केवल ज्ञान के दश अतिशय समाप्त ।)

अथ देवकृत चतुर्दश अतिशय लिख्यते ।

सोरठा-अर्द्ध मागधी बानि, सब जीवन सुख दाय है ।

आतिसय जिन को मान, देव सदाई धुन कहै ॥१॥

ॐ ह्रीं अर्द्धमागधीभाषासहितजिनेद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

१. नत्र । २. नासाग्र । ३. ध्रुव निश्चय करके ।

जह जिनकी थिति होय, सकल जीव मैत्री समा ।
अतिसय जिनको जोय, देव निमित धुनि वरनयौ ॥२॥
ॐ ह्रीं सर्वजीवमैत्रीभावयुतजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

षट रितुके फल फूल, फलैं जहाँ जिन थिति करैं ।
जिन अतिसय सुपमूल, देव निमित मातर सही ॥३॥
ॐ ह्रीं षड्तुफलपुष्पसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

दर्पन सी सब भूमि, होय तहाँ जिन विचरिहैं ।
जिन अतिसय अघ होमि, देव निमित मातर कहे ॥४॥
ॐ ह्रीं दर्पणसमभूम्यतिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

मंद सुगंधी पौन, होय सकल कू हितकरा ।
जिन अतिसय सुभ सौनि मोक्ष गमन को हैं सही ॥५॥
ॐ ह्रीं सुगन्धितपवनातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

सर्व जीव आनंद, होय जहाँ जिन विचरि हैं।
कटत पापके फंद, देव निमित मातर सही ॥ ६ ॥
ॐ ह्रीं सर्वानंदकारकजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥
कंट रहित भू होय, अतिसय तो जिन देवकों।
देव निमित को सोय, पूजो सिव सुर अवतरे ॥७॥
ॐ ह्रीं कंटकरहितातिशयसहितजिनेन्द्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥
गंधोदक सुभ वृष्टि, देव करैं अति सुभ लहैं।
सुष पावत लषि सृष्टि, महिमा जिनवर देवकी ॥८॥
ॐ ह्रीं गंधोदकवृष्टयतिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥
जिन पद पूजैं देव, कवल रचै हित कारने।
अदभुत महिमा लेव, भाषित जिन सब भवि करो ॥९॥
ॐ ह्रीं पदतलेकमलरचनायुतजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

निरमल होय अकास, सब जीवन सुष कारजी ।
अतिसय जिन सुष रासि, देव करैं उर भक्ति तैं ॥१०॥

ॐ ह्रीं गगननिर्मलातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

सब दिस निरमल होय, धूम षेह वरजित सुभग ।
अतिसय जिनको जोय, देव करैं वसि भक्तिके ॥११॥

ॐ ह्रीं सर्वदिशानिर्मलातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

देव करैं जयकार, ता करि नभ वहरो कियो ।
अतिसय जिनको सार, देव भक्ति वसि उच्चरें ॥१२॥

ॐ ह्रीं जयजयशब्दातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ॥

धर्म चक्र सुर लेय, अगवानी नित संचरै ।
अतिसय जिनको जेय, देव करैं वसि भक्ति के ॥१३॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्रातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

मंगल द्रव्य वसु जानि, देव लेय आगे चलैं।
अतिशय जिनको मान, देव सहायक भक्तिके ॥१४॥

ॐ ह्रीं वसुमंगलद्रव्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

वेसरी छंद—पंखो चमर छत्र कुंभ भाई। झारी दर्पण पडघा थाई ॥
साथ्यो मिलि वसु मंगल थानो। ये चौदह देवों कृत मानों ॥१५॥

ॐ ह्रीं देवकृतचतुर्दशातिशयसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

(इति देवकृत चतुर्दश अतिशय समाप्त ।)

अथ अष्ट प्रातिहार्यों के अर्घ (भुजंगी छंद)

कहों प्रातिहार्ज्य वसु हरप दाई, तहां विराछे असोक नहीं सोक दाई।
लखे तास को सोक हेरो न पावे, ये महा गुन जिन विना नाहिं आवे॥१॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्षप्रातिहार्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

देव सुर द्रुम के फूल ल्यावैं, महा भक्ति वासि मेघ ज्यों ते चलावैं।

मनो जोतिषी ज्यान नभ सेसुध्यावैं, ये महा गुन जिन विना नाहिं आवैं ॥२॥

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टिप्रातिहार्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

दिव्य धुनि सकल जीय को सुहाई, सुनें पाप खय होय भला पुन्य दाई।

नमै देव पग और सवै पाप जावैं, ये महा गुन जिन विना नाहिं आवैं ॥३॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

चमर गंध धारा जिमै सोभ दाई, चलैं देव कर वोपमा अधिक थाई।

घने जीव मुखते प्रभू भक्ति गावैं; ये महागुन जिन विना नाहिं आवैं ॥४॥

ॐ ह्रीं चतुः षष्टिचामरवीज्यमानजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

जग पूज्य सिंघपीठ भगवान केरौ, नमै तास को नासि है जगत फेरौ।

लगे कनक जुत रतन वहु सोभ द्यावैं, येमहा गुन जिन विनानाहिं आवैं।५।

ॐ ह्रीं सिंहासनप्रातिहार्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं, निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

महा जोतिजिन तनतनी चक्र थायौ, प्रभा मंडल ताने भलो नाम पायौ।

लषे तास को सात भौ दरासि आवैं, ये महा गुन जिनबिना नाहिं आवै ॥६॥

ॐ ह्रीं प्रभामंडलप्रातिहार्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

घनी जाति के देव बाजे बजावैं, तिको दुंदुभी शब्द सुभ नाम पावैं।
भनैं देव मुख वीनती हरप ल्यावैं, ये महा गुन जिन बिना नाहिं आवैं ॥७॥

ॐ ह्रीं देवदुंदुभिप्रातिहार्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

जड़े कनक नगछत्र मणि दंड धारै, लगी माल मोतिनकी लिपटि सारै।
मनो तीन जग जीव को छाय आवै, येमहा गुन जिन बिना नाहिं आवै ॥८

ॐ ह्रीं छत्रत्रयप्रातिहार्यविभूषितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

अडिल्ल छन्द-वृछ असोक सिंघासन भामंडल चमर।
पुहुपवृष्टि दिव्यधुनि दुंदुभि छत्र वर ॥
ये वसु प्रातीहार्य जिनों के होयहैं।
इन बिन ये नहिं और देव के सोग हैं ॥९॥

ॐ ह्रीं वसुप्रातिहार्यविभूषितजिनेंद्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

(इति अष्ट प्रातिहार्य समाप्त)

अथानंत चतुष्टय लिख्यते (वेसरी छंद)

ज्ञान अनंता नंत जनावै । तीन लोक त्रिय काल लपावै ॥
सर्वज्ञपनों तास तें होई । येगुन जिन विनु लहै न कोई ॥१॥

ॐ ह्रीं अनंतज्ञानसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

दरसन अनंत अनंतहि जोवै । सो सो भई होय फिर होवै ॥
याते भी सरवज्ञ पद होई । ये गुन जिन विन लहै न कोई ॥२॥

ॐ ह्रीं अनंतदर्शनसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सुप अनंत मोह हरि होवे, बाधा अनंत काल नहि जोवै ।
सुप अनंत विन देव न होई, येगुन जिन विन लहै न कोई ॥३॥

ॐ ह्रीं अनंतसुखसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

अंतराय भट जिन जय लीनो, तिन भव दुष हरि कारज कीनो।
अनंत वीर्य परकास न होई, ये गुन जिन बिन लहै न कोई ॥४॥

ॐ ह्रीं अनंतवीर्यसहितजिनेंद्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

अडिल्ल छन्द—दस जनमत दस केवल उपजे होयहै।
चौदह सुरकृत अनंत चतुष्टै सोय है॥
प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुन छ्यालीस जी।
इन अतिसय जुत होय सोय जगदीस जी॥ ५ ॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहितजिनेंद्रेभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

अथ जयमाल (वेसरी छन्द)

जिन अतिसय छ्यालीस सुपावैं, ताकी कथा सकल मन भावै।
ते भवि चित दै सुनो वषानौ, ताते होय पाप मल हानौ ॥ १ ॥

जनमत दस पसेव नहि होई, सहसथान समचतुर सुजोई ।
सहनन वज्रवृषभनाराचै, मल नाहि तन सुगंध सुभ माचै ॥ २ ॥
महा रूप सुभ लछन होहै, स्वेत रुधिर वच मधुर सुसोहै ।
बल अनंत जिन तन मे पावै, जनमत तो ए दस गुन थावै ॥ ३ ॥
केवल ज्ञान भये दस जानौ, सत जोजन दुरभिच्छ न मानौ ।
नभमै गमन दया सब ल्यावै, उपसर्ग नाहि देवकै थावै ॥ ४ ॥
कवल अहार नही जिन केरो, चव मुप दीषे छाह न हेरो ।
सवबिद्या के ईश्वर होई, नप अरु केस बढै नाहि कोई ॥ ५ ॥
आंषिन की भौं टिमकै नाही, ये दस केवल उपजे थाही ।
अब सुनि देव चतुर दस ठानै, अर्द्ध मागधीभापा मानै ॥ ६ ॥
सकल जीव के मैत्रीभावो, सव रितुके फल फूल फलावो ।

दरपन समान भूमि तहां होई, मद सुगंध पवन सुभ जोई ॥७॥
सब जीवन को आनंद होवै, भूमि कंटिका रहित सु सोवै ।
गंधोदक की वरपा जानौ, पद तल कमल रचत हित थानौ ॥८॥
निरमल गगन देव जय वानी, दसो दिसा निरमल अधिकानी ।
धर्म चक्र वसु मंगल ठानौ, ये चौदह देवा कृत मानौ ॥ ९ ॥
अब सुनि प्रातिहार्य वसु भाई, वृक्ष असोक पुहुप वृष्टि थाई ।
दिव्यधुनि चमर सिंहासन जानो, भामंडल दुंदभि सुप दानौ ॥ १०॥
छत्र सहित वसु जानौ भाई, फिरि सुचारि चतुष्टै थाई ।
दरसन ज्ञान वीर्य सुप वेवा, ये छ्यालीस गुण जुत है देवा ॥ ११ ॥
ये गुन जामै देव प्रसिद्धा. इन विन और देव सब अंधा ।
याते देव परपि करि सेवो, सुरग मुकति सुपको भवि वेवो ॥१२॥

घत्ता—जहां ये गुन होई, देव जु सोई, मंगल करता भव्यन को।
सो मो को तारो, वा जग प्यारो, दे अपनी थुति सबजन को॥१३॥

ॐ ह्रीं षट्चत्वारिंशद्गुणसहितजिनेंद्रेभ्यो पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३।

(इति अरहंत देव पूजा समाप्त)

अथ सिद्ध पूजा लिख्यते (अडिल्ल)

आठो कर्म निवारि धारि गुन आठजू, भये निरंजन छिनमै सुषके ठाठ जू।
बातवलै तन ठये लोक त्रिय पति भये, ते सिध नमो सुभाय ज्ञान मूरति ठये।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याव्हाननम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

पद्धरी छन्द—ये ज्ञाना वरनी पंच वीर, जिन घात्यौ जिय गुन ज्ञान धीर।
सब वरनी घाति लयो सुज्ञान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥१॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकारज्ञानावरणीयकर्मविनाशक सिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

नव दरसन वरनी दरस छाय, इन घाते ते भगवान थाय।
सो धरै अनंत दरसन सुथान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥२॥

ॐ ह्रीं नवप्रकारदर्शनावरणीयकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

कर्म एक वेदनी दोय भेव, मोहि को सुप दुप देवैं स्वमेव।
हरि वेदनि होय अबाध थान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥३॥

ॐ ह्रीं द्विप्रकारवेदनीयकर्मरहितसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

मोह दो प्रकार वसि जगत जोर, तिन जिय गुन सम्यक जयो सोर।
तिस मोहको जीते जगत जान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥४॥

ॐ ह्रीं द्विविधमोहकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

कर्म आयु चार वसि जगत जेर, घोडे पग ज्यौं परवासि पडेर।
तिन आयु-घाति अव गाह ठान, तेसिद्ध जजों त्रिय जगप्रधान॥५॥

ॐ ह्रीं चतुःप्रकारायुकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

कर्म नाम चेते राज्यौ वषान, इन घाति अमूरति भये सुजान ।
गति स्वांग धरन त्यागो महान, ते सिद्ध जजों त्रिय जग प्रधान॥६॥

ॐ ह्रीं नामकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

ये गोत्र कर्म दोय विधि सरूप, ता वसि कब हूं फेर रंक भूप ।
ये नासि अगुर लघु गुन सुमान, ते सिध्द जजों त्रिय जग प्रधान ॥७॥

ॐ ह्रीं गोत्रकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

विधि अंतराय कर्म पाँच भेव, तिन जिन को गुन घात्यो स्वमेव ॥
ताको हति केवल अनंत ठान, ते सिध्द जजों त्रिय जग प्रधान ॥८॥

ॐ ह्रीं पंचप्रकारांतरायकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

गीताछंद—ज्ञानदरशान वरण वेदनी मोह जुत हनी ।
आयु नामरु गोतकर्म अंतराय हरि कीनी मनी ॥

ये आठ कर्म हरि दाहि आतम आपको पद सुध कियो ।
ते भय तीनो लोक नायक नमो धुव चाहो जियो ॥९॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मविनाशकसिद्धपतिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अथ जयमाल (चालपंच मंगल की)

तीन लोक त्रिय सत ते ताली, घनाकार ताके मधि नाली ।
चौदह राजू त्रिस तहां होई, चारों गति रचना मधि सोई ॥१॥
अधो भाग नर्क सात वताये, मध्यमें नर तिरजंच सुगाये ।
गाये जु ऊपर देव थानक उर्द्धकों फिर सिध सिला ॥
ता ऊपरै सिधदेव राजै पवन इकथल में मिला ॥
ते कर्म काटि सुवाट जावे ते सकल इस थल रहैं ॥
रहैं काल अंनत सुथिर फेरि भव तनना लहैं ॥ २ ॥

एक एक शिव थानक माहीं, सिद्ध रहे हैं अनंता ठाही।
भिन भिन रहै मिलै नाहि कोई, द्रव्य गुण परजै निज निज सोई।
सवही चेतन गुन बहु धारैं, सुषमय तिष्टत अघ अरि जारैं॥
जारैं जु आठो कर्म भवदा आठ गुन परकासये।
तिन ज्ञान मे त्रय लोक घट पट आनि कै सब भासये॥
ते नमो सब सिद्ध चक्र उर धरि तास फल सिव थल लहों।
और थुति फल नांहि वांछा नाहि अन मुपते कहों॥३॥

ॐ ह्रीं णमोसिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ ३॥

इति सिद्धपूजा समाप्त।

❋ अथ आचार्य पूजा लिख्यते ❋

दोहा—गुन छतीस तिन्न दिग रतनं, भव वन संकट टार।

नमो चरन तिनके सही तिन गुन जाचन सार ॥१॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठी अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठी अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठी अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सं

चाल छन्द—जे सब ते करुना आने, सो उतम षिमाको जाने ।

ते आचारज सुपदाई, सो पूजों अर्घ चढाई ॥१॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमाधर्मसहिताऽऽचार्यं परमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

जो मानरंच नहि लावैं, सोमार्दव गुन को पावैं । ते आ०॥२७

ॐ ह्रीं उत्तममार्दवधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

जाके उर माया नाहीं, सो आरज भाव कहाहीं । ते आ० ॥३॥

ॐ ह्रीं आर्जवभावसहिता ऽऽचार्य परमेष्ठिभ्यो ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

तन जावो तो भल भाई, ते झूठ न कहहिं कदाई । ते आ० ॥४॥

ॐ ह्रीं सत्यधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

ताके उर वांछा नाही, सो निरमल सौच कहाही । ते आ० ॥५॥

ॐ ह्रीं शौचधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

इंद्री वसि प्रान को राषै, सो संजम दो विधि भाषै । ते आ० ॥६॥

ॐ ह्रीं द्विविधसंयमधर्मसहितायाऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

जो द्वादस विधि तप ल्यावै, परनत नहि पेद लगावै । ते आ० ॥७॥

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहिता ऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्यो ऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

पर द्रव्य नही अपनावै, सो त्याग धर्म चित भावै । ते आ० ॥८॥

ॐ ह्रीं त्यागधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जो अंतर बाहिर नागा, सो आकिंचन भय भागा । ते आ० ॥९॥

ॐ ह्रीं आकिंचनधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

निज पर तिय को सुभ त्यागी, सो ब्रह्मचर्य अनुरागी । तेआ० १०

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यधर्मसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

कडषा छन्द—येक दोय चार षट अष्ट दिन पष लगौ षान पानी तनोल्यावै।
मास द्वै येक षट चार वरसी भलौ धीर ताजि असन उरसा सो ध्यावैं ॥
इनहि आदिक तिको वास दुध्दर करै नाहि परनताविषै षेद आनै ।
जीयको धीर आचारके धार आचार्यहै नमो तिन चरनफल पापभानै॥११॥

ॐ ह्रीं अनशनतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥११॥

भूषते अर्द्ध षावैं तथा भाग त्रिय भाग चौथो भषै व्रतधारी।
येक द्वै ग्रास लै भाव समता धरै तास ते जाय अघ सूर हारी ॥
नाम ऊनोदरी वृत्त याको कह्यौतासके धार गुर जगत जानै। जीय०॥१२॥

ॐ ह्रीं ऊनोदरव्रतसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

धरै जो वृत तामै महादृढ रहै रोजकी तास परमान ल्यावै ।
तासकूं याद रापि सकल कारज करै नेम पर मान ता विधि निभावैं ।

पान अरु पान गमनादि सब रापिले नाम संष्या रात सूरआनै। जीय॥१३॥

ॐ ह्रीं व्रतपरिसंस्थानतपधारकाऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥

रोजषट रस विषै रसन को त्यागिहै नाहिसब रसा येक बार पावै।
मोहवल विपै विनराग चितरापिहै नाहि रसना वसी आप आवै॥
भोग अछर सन तजि आपभोगीभयौरैन दिन ध्यान धेमाहि आनै। जीय०१४

ॐ ह्रीं रसपरित्यागव्रतधारकाऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१४॥

जाहि आसन थकी धीर तहँ थिति करै तास विधि लौ नही ठाम क्षोरै॥
काल जेते तनो नेम धौरैं वुधा वार तेता वपू प्रीति तोरैं॥
देव पग नरपसू कृत जो दुप मिलै तोहु ते धीर दुष नाहि मानैं जिय० ॥१५॥

ॐ ह्रीं विविक्तशय्यानतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

तनविपै पेदको निश्चित जो विधि मिलै सोहि विधि ठानि समभाव ल्यावैं
त्याग तन को किये वृत ऐसो वनै मोह वसि जीव इह नाहि पावैं॥

वीतरागी विना व्रत को सिर धरै रागजुत जीव तो हारि मानै। जीयको० १६

ॐ ह्रीं कायक्लेशतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

बोल परमाद वसि दोप परनति विषै तथा चल हलत को पाप लागै।
तासको छेद कारन लहै दंड मुनि धीरता देपि अघ नाहि जागै॥
आपँही आपको दंड लेते मुनी तथा गुरु पासलै सकल जानैं।
जीय के धीर व्रत धार आचार्य हैं नमो तिन चरनफल पाप भानै १७

ॐ ह्रीं प्रायश्चित्ततपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥

आपते गुनी तिनको विनै जे करै ते महाव्रत को ओप ल्यावैं।
बिगर नमनी किये हानि सब गुननकी तासते देखि बुधि मान ढावैं॥
सकल संजम तनी वाहि दिढ है यहै जतन्न ते ते गुनी याही आनै।जीयको०॥

ॐ ह्रीं विनयतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥ १८ ॥

आप ते महंत गुनधार हैं जे जती तथा श्रुत देव महा सुख दाई।

तिनहि वंदगी रूप परनति जानिये सो वईयावृत वानि गाई ॥
वृत ऐसो वनैमोक्षमारग लहै होय मन्द मोह यह रीति ठानै। जीयको ॰ १६
ॐ ह्रीं वैयावृततपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १६ ॥
रैन दिन वानि जिन पाठ मुख ते करै तथा उपदेस दे हरपलाई ।
उर विषै वानि जिन सदा चिन्तवन करै रहै जिन आनि में भक्ति भाई ॥
करै गुरु पास परसन विनै ठानि कै इह विधि पांच स्वाध्याय आनै। जीयको २०
ॐ ह्रीं स्वाध्यायतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २० ॥
त्याग तनको करै वृत ऐसो धरै सूर उपसर्ग ते नाहि भागै ।
लिखे कर्म के ठाटदुप सुप सहै जगत मै छांडि परमोह निज मांहि जागै ॥
राग तन माहि सो दिढ तपा नाहि विन सर्ग तप धारि तन प्रीति हानै। जीयको॥
ॐ ह्रीं व्युत्सर्गतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २१ ॥
मन वचन कायात्रिय जोग इक ठाम करि आप सुध ध्याय पर भाव त्यागें

तथा देव अरहंत परमेष्टि सिध के गुन तनी माल सुभ भाव लागैं ॥
रोक चित मृग सुभ ध्यान जाली विपै येक थलरापि सिवठाहि आनै । जीयको०

ॐ ह्रीं ध्यानतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २२ ॥

कहे तप अंतर वाहिर करी द्वादश धीर तन त्याग विनराग ध्यावै ।
जीव रागी विपै चाह ताकी रहै सो नहीं इन दसी भाव ल्यावै ।
यहै जानि रागी विना रागकी पारिपा ठानि तप धारि ते धीर आनै । जीयको

ॐ ह्रीं द्वादशतपसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २३ ॥

अथ षट् आवश्यक के अर्घ,

पद्धड़ी छन्द—जे षट आवसि धारै सदीव, ते सुद्ध सरूपी होय जीव ।
गुन धारि जारि कर्म आठ वीर, निज तिरैं और तारक सुधीर ॥ २४ ॥

ॐ ह्रीं षडावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २४ ॥

सब जीव तरस थावर सुजान, सम भाव सकल पै चित्त ठान ।

ताजि आरति रुद्र सुभाव सोय, समता उर सो सामाय होय ॥ २५ ॥

ॐ ह्रीं सामायिकाश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २५ ॥

अरहंत सिद्ध आदिक महंत, तिनकी थुति नित मुनि वर करंत ।

उर निरमल करि सुध भाव ठान, ता फल पावे सिध लोक थान ॥२६॥

ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २६ ॥

ते सुद्ध भाव कारन महान, वंदन विधि करि है देव थान ।

ताते अघ रज धोवै सुवीर, ता फल पावैं भव समुद तीर ॥२७॥

ॐ ह्रीं वंदनावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २७ ॥

मुनिके मन वच तन दोष लाय, सो दूरि करै प्रतिक्रमन भाय ।

उर आलोचन करि सुद्ध होय, ते सूर नमो मद टारि जोय ॥२८॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२८॥

मन वच तन अघ विधि त्याग होय, तपि आवासि प्रत्याख्यान सोय ।

ये करै रोज आचार्य जान, ता फल चिंतै अघ होय हान ॥२९॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२९॥

तन त्याग होय थिर थान सोय, कायोत्सर्ग आवसि कर्म होय।
ये करै रोज आचार्य मान, तावलि चिंतै अघ होय हान ॥३०॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

अथ पंचाचार के अर्घ

सोरठा—सुद्धपदारथ भाव जानै गुन परजै सकल।
ताकरि होय सिव राव ज्ञानाचार सो जानिये ॥३१॥

ॐ ह्रीं ज्ञानाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३१॥

सकल पदारथ सोय देषै सुध करि सरदहैं।
ताते सिव सुख होय सो दर्शन आचार है ॥३२॥

ॐ ह्रीं दर्शनाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

छाडै सकल कषाय गुपति सुमति वृत आदरै ।
बरतै नगन सुभाय सो चारित्राचार है ॥३३॥

ॐ ह्रीं चारित्राचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३३॥

कर्म हरन के काज वीरज फोरै आपनो ।
तप संजम बहु साज सो बीरज आचार है ॥३४॥

ॐ ह्रीं वीर्याचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३४॥

द्वादस विधि तप ठानि समता भावन परनवै ।
सो करि है कर्म हानि तपाचार सो जानिये ॥३५॥

ॐ ह्रीं तपाचारसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३५ ॥

अथ तीन गुप्तियों के अर्घं (गीता छन्द)

मन चपल है करि कांन जैसो कापि तने पद कू लहै ।
ताकी विकलता लहर दधि ज्यों जगत जिय त्रासि ना रहै ॥

ते धन्य गुरु वसि कियौ याकूं आप या वासि ना रहै ।
मन गुपति याकू जानि भावि जन या फलै सिव सुर ठहै ॥३६॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३६॥

वचन निज वसि राषि भापत जिन तनी बानी कहै ।
परमाद वच कवहू न भाषै ता थकी जिय अघ लहै ॥
इह वचन गुपति सदीव आचारज जिको पावै सही ।
वन वचन तन वसु द्रव्य ले करि पद जजों इनके सही ॥३७॥

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३७॥

जो काय अपने हाथ राषै चपलता मेटै सही ।
परमाद टारि सुधारि थिरता जारि अघ ले सुभ मही ॥
लपि काय गुपाति सुनाम याको सदा आचारज करै ।
ते धीर या फल जारि सब कर्म मुकति सी रमनी वरै ॥३८॥

ॐ ह्रीं कायगुप्तिसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३८ ॥

धर्म दस विधि बरत बारह गुपति तीन वषानिये ।
आचार पांचौ महासुन्दर आवासि षट सुभ मानिये ॥
इह गुन छतीसो धरें सोही सूर आचारज कहे ।
तिन चरन कमल सुद्रव्य बसु लै जजों मन वच तन वहे ॥३९॥

ॐ ह्रीं षड्त्रिंशद्गुणसहिताऽऽचार्यपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३९॥

अथ आरती जयमाल

दोहा—आचारज गुन आरती कहूँ हिये थुति आनि ।
ताकूं नामि पुनि फल लहै होय पापकी हानि ॥१॥

पद्धरी छन्द-उत्तमछिमा क्रोध भट मार्यौ । मार्दव मान जिसो अरि टार्यौ ।
आर्जव माया कुटनी टारी । सत्पथ की सब भूट निवारी ॥२॥
सौच सकल उरको सुचि कीनौ । संजम ते अव्रत जय लीनौ ।

तप तपि सकल पाप निरवारै । त्याग भाव पर ते परवारै ॥३॥
आकिंचन परिग्रह परिहारै । ब्रह्मचर्य तिय भाव निवारै ॥
येही धर्म दसों सुषदाई । अब सुनि द्वादस तप मन लाई॥४॥
अनसन वास तनी विधि सोही। आमोदर्य पान तुछ होही ॥
बृतपरिसंष्या नित बृत ठानै । रसपरित्यागी रस नहि जानै॥५॥
विवगति सज्या थल दिढ होहै ।कायक्लेस कष्ट विधि जोहै॥
ये तो वाह्य तने पट जानो । अब पट अंतर तप सुनि कानो॥६॥
प्राछित लगै दोष कूं टारै । विनै वड़ोंकी नमन सु धारै ॥
वैयावृत गुरु को सुष ठानै । सो स्वाध्याय वानि सुप आनै ॥७॥
वुतसर्ग काय त्याग विधि होई ।ध्यान धर्म मन चिंतै सोई ॥
अब सुनि पट आवासि की वातैं । तातै होय महा सुभदा तैं ॥८॥

सामायक सब नें समभावा । स्तवन जिन सिध की थुति चावा ॥
वंदन सो जिनको सिर नावै । प्रतिकर्मन ते पाप मिटावै॥६॥
प्रत्याख्यान त्याग सो जानो । कायोतसर्ग तन त्याग बपानो ॥
अब सुनि पंच अचार सुभाई । तिन बल बहु जीवन सिव पाई १०
ज्ञानाचार ज्ञान विधि ठानै । दरसन सो दरसन विधि आनै ॥
चारित चारु चरित विधि लावै । तपाचार तप रीति करावै॥११॥
वीर्याचार पुरुपारथ जानो । अब सुनि तीनो गुपाति बपानो ॥
मन वच तन वासि राखै सोई । गुपाति नाम जानै भवि होई।१२

घत्ता—दोहा—इनं छत्तिस गुन सहित जो, नमो सूर मन लाय ।
ताके गुन पावन निमित, भव भव होय सहाय ॥१३॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणसहिताऽचार्यपरमेष्ठिभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १३ ॥

(इति आचार्य पूजा समाप्त)

अथ उपाध्यायजीकी पूजा लिख्यते

दोहा—अंग पूर्व धारक मुनी नमो तास पद जान ।
ता फल अघ मिटि सुभ बनै लहै सुद्ध सिव थान ॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन् अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्

सोरठ-चौदह पूरब सार एकादस अंग जुत सही ।
ये पचीस गुन धार होय उपाध्या सो नमों ॥१॥

ॐ ह्रीं पञ्चविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

मरहठा छन्द—आचारंग मैं इम बरनायौ सुनो भविक चित आनि ।
काज सकल ही करौ जतन ते महा सुद्ध उर जानि ।
या अँग रहस सकल ही पावै उपाध्याय है सोय ॥

तिनके पद वसु द्रव्य थकी भवि पूजो मन वच होय ॥२॥

ॐ ह्रीं आचारांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

सूत्र कृतांग दूसरो अंग है तामै इम वाष्यान ।
धर्म तनी किरिया सव यामै भापी है भगवान ॥ या अं०।ति०॥३॥

ॐ ह्रीं सूत्रकृतांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

जानो तीजो अंग स्थाना तामधि जीव के थान वताय ।
येक दोय आदिक उगनीसों चौसठ पट जिय ठाम सुपाय।या०॥४॥

ॐ ह्रीं स्थानांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

है समवाया अंग चतुर्था यामधि वस्त सकल सम गाय ।
धर्म अधर्म द्रव्य सम भापे जगत जीव सम सम सिध भाय। या॥५॥

ॐ ह्रीं समवायांगसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

अंग वाक्षा पर गुप्ति पंचमो तिस में ऐसो कथन चलाय ।

अस्ती जीव नास्ती जानो येक अनेक सुवंस्तु सुभाय ॥या०॥६॥

ॐ ह्रीं व्याख्याप्रज्ञप्त्यंगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वा ।॥६॥

षष्टम ज्ञात्रि कथा अंग जानौ-तामहि सकल कथा व्याख्यान ।
चक्री कामदेव तीर्थंकर इन आदिक पहुँचे सुभ थान ॥या अ० ।७

ॐ ह्रीं ज्ञातृधर्मकथांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

जानि उपासिक अंग सप्तमो तामधि श्रावक कथन कहाय ।
एकादस पाडिमा आदिक वहु किरिया तनै समूह वताया॥या०॥८॥

ॐ ह्रीं उपासकाध्यनांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ८

अंतकृतांग दशांग महा अंग अष्टम यामधि इम लिषिवाय ।
इक इक जिन वारै अंतह कृत दस दस केवल कथन चलाया॥या०९

ॐ ह्रीं अंतःकृद्दशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥९॥

अनुत्तरो उपपाद दसांग अंग तिस महि इक इक जिनकी वार

दस दस मुनि अति सह्यौ उपद्रव गये अनुत्तर इम लषि सार ।या०१०

ॐ ह्रीं अनुत्तरोपपादिकदशांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

परसन व्याकर्ण अंग विषै इम गई वस्तु इत्यादि बताय ।

जीवन मरन सुखी दुषकी विधि सब परसन के भेद चलाय।या०११

ॐ ह्रीं प्रश्नव्याकर्णांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

सूत्र विपाक अंग एकादस तामहि कर्म विपाक बषानि ।

तीबर मंद भावते बाँधे सो रसदे इत्यादि सु जानि ।या०ति॥१२॥

ॐ ह्रीं विपाकसूत्रांगज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१२॥

(इति एकादस अंग समाप्त)

अथ चौदह पूर्व के अर्घ

अडिल्ल--अब चौदह पूरब की कथा सुहावनी ।

तिन इह पाई रिद्धि जिनै अघ रज हनी ॥

इनके धारी उपाध्याय जग गुरु कहे।

तिनके पद वसु द्रव्य थकी जजि अघ दहे ॥१३॥

ॐ ह्रीं चतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४३॥

गीताछन्द-पूर्व है उतपाद परथम कथन तामै इम सही।

वस्तु के उतपाद वय ध्रुव आदि महिमा अति लही ॥

इन पूर्व के अर्थ भाव जानै उपाध्याय सो जानिये

वसु द्रव्यतें पद जजों मन वच भक्ति उर अति आनिये ॥१४॥

ॐ ह्रीं उत्पादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पूर्व अग्रायन सु दूजो कथन नय दुर नय करै।

तत्व द्रव्य पदार्थ के परमान जानै उर धरै। इन० वसु० ॥१५॥

ॐ ह्रीं अग्रायणीपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

पूर्व वीर्य प्रमाद तीजो कथन वीरज को चलै।

आत्म वीर्य सुकाल पेतर ज्ञान चारित पर मिलै । इन० वसु।१६॥
ॐ ह्रीं वीर्यानुप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीतिं स्वाहा ॥१६॥

आस्ति नास्ति सुपूर्व चौथो सप्तभंग वषानिये ।
द्रव्य तत्व पदार्थ के सब आस्ति त्रय विधि जानिये ।इन० वसु१७॥
ॐ ह्रीं अस्तिनास्तिपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१७॥

पूर्व ज्ञान प्रवाद पंचम ज्ञान वसु लक्षन कहे ।
सब ज्ञान फल परमान इनको आदि सहु विधि ते लहे।इनव०१८॥
ॐ ह्रीं ज्ञानप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१८॥

पूर्व सत्य प्रवाद षष्टम गुपत भेद वषानिये ।
सति असत्य अनेक वैन सुभेद तातें जानिये । इन० वसु॥१६॥
ॐ ह्रीं सत्यप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२६॥

आत्म प्रवाद सुपूर्व सप्तम जीव लक्षन तँह कह्यो ।

जीय आयो जीवगो इन आदि इस पूरव ठयौ। इन०। वसु०॥ २० ॥

ॐ ह्रीं आत्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

पूर्व कर्म प्रवाद तामधि कर्म की सब विधि कही।

लषि सत्ता बंध उदै सु परकित आदि इनको फल सही। इन० वसु० ॥

ॐ ह्रीं कर्मप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२१॥

पूर्व प्रत्याख्यान नवमो बस्तु इत्यादिक कही।

अरु द्रव्य क्षेत्र सुकाल संवर वास मत्यादिक सही। इन० वसु० ॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२२॥

पूर्व है विद्यानुवाद सु अष्ट निमित बषानिये।

विद्या साधन रूप फल बल आदि रीति सुमानिये। इन०। वसु०॥

ॐ ह्रीं विद्यानुप्रवादपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२३॥

पूर्व है कल्याणवाद सु तहाँ इस विधि वरनयौ।

कल्यान पांचो जिन तने जोतिष गमन को फल चयौ। इन०। वसु०॥

ॐ ह्रीं कल्याणपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२४॥

पूर्व प्राणावाद माही मंत्र तंत्र सुविधि कही ।
फिरि वैद्य जोतिष भूत नासनकी सकल विधि है सही इनवसु २५

ॐ ह्रीं प्राणावायपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२५॥

पूर्व क्रिया विसाल के मधि गीत नृत्य छंद विधि कही ।
सास्त्र नय लंकार चौसठ कला तिय की तहाँ सही इन वसु २६॥

ॐ ह्रीं क्रियाविशालपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२६॥

पूर्व चर्म त्रिलोक विंदु सुकथन तहँ इम वरनयौ ।
उर्द्ध मध्य अधोलोक को सब दुष सुषा थल जिम चयौ । इनवसु०

ॐ ह्रीं लोकविंदुपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२७॥

पद्धरी छंद-अंग एकदश अदभुत सुज्ञान, फिर पूर्व चौदह और जान ।
इनके गुन वेत्ता ते महंत, जिन उपाध्याय पूजों सुसंत ॥२८॥

ॐ ह्रीं एकादशांगचतुर्दशपूर्वज्ञानसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ जय माल

दोहा-बीस पाच गुन धार गुरु, उपाध्याय हित दाय ।
तिन वंदे थुति के किये, महा पुन्य उपजाय ॥१॥

केसरीछंद-आचारांग भनै सुपदाई, सूत्र कृतांग रहस सब पाई ॥
थाना अंग सथान बताये, समवाया अंग के गुन थाये ॥२॥
व्याख्या प्रगुप्त अंग को जानै । ज्ञातृ कथा को भेद बपानै ॥
अंग उपासिक धेनु सुधायौ । अंग कृतांग दसांग सुभायौ ॥३॥
अनुत्तर पाद दसांग सुजानौ । अंग प्रश्न व्याकर्ण बतानौ ॥
सूत्र विपाक अंग हितकारी । तिनकी रहसि लई गुरु सारी॥४॥
यह एकादस अंग तिन पाये । उपाध्याय सो सब मन भाये ॥
अब पूरब चौदह सुन भाई । प्रथम पूर्व उतपाद कहाई ॥५॥
अग्रायन पूरब कूंधारै । वीर्य प्रवाद पूर्व अघ जारै ॥

आस्ति नास्ति परवाद सुजानौ । ज्ञान प्रवाद पंचमों मानों ॥ ६ ॥
सत्य प्रवाद पूर्व कों पावै । आत्म प्रवाद पूर्व समझावै ॥
कर्म प्रवाद पूर्व सुख कारो । प्रत्याख्यान पूर्व को धारो ॥ ७ ॥
पूर्व विद्यानु वाद को जानै । पूर्व कल्याण वाद अघ हानै ॥
प्राण वाद पूर व हरि पायौ । पूर्व क्रिया विसाल उर जायौ ॥ ८ ॥
अंतिम लोक विंदु है भाई । ये चौदह पूर व सुखदाई ॥
इनके धार उपाध्या होवै । तिनके जजैं सिवासुर जोवै ॥ ९ ॥

सोरठा—इह पूर व अंग धार, तिन जग पूजित पद लयौ ।
सो करि है अघ छार, तिन पूजे जिन पद लहैं ॥

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसहितोपाध्यायपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

(इति उपाध्याय जी की पूजा समाप्त)

अथ साधू महाराज की पूजा लिख्यते

दोहा—वीस आठ गुन साधु के, नमो तास कर जोर ।
ताके वंदे पाप सब, जाय सकल दिग छोर ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन्अत्रावतरावतर संवौषट् आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधि०

चौपाई—अष्टाविंसति गुण जुत होय । साध जिको जगके गुरु जोय ।
आतम रंग राचे मुनि नाथ। पाऊँ इन पद भव भव साथ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १ ॥

गीता छन्द-तिरस थावर जींव सबही आप सम जानै सही ।
मन वचन तन जिय को न दुषदा सकल पै समता लही ॥
जो दुष्ट को निज काय पीडै तौ न कबहूं दुष करै ।

ते साधु पूजों अरघ कर ले तास फल सुप संचरै ॥२॥

ॐ ह्रीं अहिंसामहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२॥

तन जाय तौ नहि असत भाषत कहै सत वच सारजू ।
चवै सम्यक बैन सोंहू सूत्र के उनहार जू ॥
तिस वचन को सुनि सकल प्रानी पाप मति अपनी हरै। तेसा० ३

ॐ ह्रीं सत्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥३॥

बिन दिये परको माल कबहूं मन वचन छूवै नहीं।
तन आपने हू ते सुविरकति दिये ते भोजन लही ॥
काय नगन फिरै उदंड सो जाचना बुधि ना करै। तेसा० ॥४॥

ॐ ह्रीं अचौर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥४॥

नारि देव मनुष्य पशुकी मन वचन तन करि तजै।
सो सील धर होय बाल सम निरदोष अपनो पद सजै ॥
ते जगत तिय तजि मुकति नारी वरन को उद्यम करै। तेसा०॥५॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्यमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥५॥

जे तजैं द्वै विधि परिग्रह कूं बाह्य भ्यंतर जानिये ।
तिल मात्र पुदगल बंध सेती ममत की विधि भानिये ॥
जे रहे विमुष सुभाव तन ते सोहि समता उर धरैं । तेसा० ॥६॥

ॐ ह्रीं परिग्रहत्यागमहाव्रतसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

चारिकर भू सोधते पद धरैं सुभ चित लायकैं ।
जो बनै कारन जोर इत उत तो लपै नहिं भायकैं ॥
त्रस जीव थावर सकल सेती भाव समता उर धरैं । तेसा०॥७॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥७॥

जो बोलि हैं वच सकल हितदा पेद को जिय ना लहै ।
जिन बैन भाषित सभा भापत फेरि समता जुत रहै ॥
तिन वचन को सुनि भव्य प्रानी आपने अघ कूं हरैं ।तेसा०॥८॥

ॐ ह्रीं भाषासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥८॥

जे लहै अनजल सोधि सुभ चित एक टक ठाढे भपै।
नहि सैन अंगुरी नैन मुषते बोल हू नाही अपैं ॥
फिर दोष षटचालीस टालै और दूषन वहु टरै। तेसा० ॥६॥

ॐ ह्रीं एषणासमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥६॥

जे धरैं वस्तु संभाल पृथवी लेंय भू ते जोय कै।
परमाद तें लें धरैं नाही महा सुभ चित होयकै ॥
तिन मांहि नाहि प्रमाद रापै लगे अगिले अघ हरै। तेसा०॥१०॥

ॐ ह्रीं आदाननिक्षेपणसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१०॥

मल मूत्र पेपै ठाम लपि कै तिरस थावर पालिया।
निज भाव मीतो करम रीतो औरके अघ टालिया ॥
तिस बनैं राजै आय जोगी वैर जिय सव परिहरैं। तेसा०॥११॥

ॐ ह्रीं उत्सर्गसमितिसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

जे हलो भारी उसन सीतल नरम करकस जानिये।

लूपो रु चिकनो आठ लच्छन फरस इंद्री मानिये ॥
या फरस इंद्री जगत जीत्यौं तास कूं जे वासि करै । तेसा०॥१२॥
ॐ ह्रीं स्पर्शनेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
मिष्ट षाटो कटु कसायल चिरपरो पांचौं सही ।
ये रसन इंद्री विषय जिय को जकडि करि बाँधो मही ॥
रसन आक्षिने जगत जीत्यौ तास कूं जे वासि करै । तेसा०॥१३॥
ॐ ह्रीं रसनेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१३॥
सुगंध अरु दुरगंध दो विधि गंध इंद्री जानिये ।
इन विषै वासि जिय होय रागी दोप उर महि आनिये ॥
इन जीय जगके सकल जीते तास कुं जे वासि करै । तेसा० ॥१४॥
ॐ ह्रीं घ्राणेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥ १४ ॥
पीत स्याम सुपेद सब्ज सु सुरख यह पांचों कहे ।
इनके वासि जिय देषि पुदगल राग दोपी चित लहै ॥

ते विषै इंद्री चक्षु वसि करि आप निर अँकुस फिरै । ते० ॥

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१५॥

सचित अचित सु मिश्र तीनौ विषय श्रवन तने कहे ।
सुभ सुने रागी असुभ सुनि कै दोष जुत उर में भहे ॥
जिन विषै श्रोत्तर आप वसि करि भाव बिच समता धरै । तेसा०॥

ॐ ह्रीं कर्णेन्द्रियजयनिरतसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१६॥

चाल जोगीरासाकी—समता भाव सकल जीवन ते आप समा सब जानै ।
संजम तप शुभ रहै भावना राग दोष नहि आनै ॥
आरत रुद्र न भोग भूमही निर आकुल रस रीझै ।
तिन साधन के तिन प्रति जुग पद पूजे तें अघ सीझै ॥१७॥

ॐ ह्रीं सामायिकावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अरहंत सिद्धकी जो थुति कीजें भक्ति भाव उर आनी ।
ताही रस आतम रंग ल्यावै सो सतवन विधि जानी ॥

सो मुनिया भी निसि दिन ठानै मन वच काय लगाई ॥
तिनके पद वसु द्रव्य थकी हूं पूजों इक चित्त लाई ॥१८॥
ॐ ह्रीं स्तवनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

मन वच तन अरहंत सिद्ध कूं कर धर सीस नमावै ।
सो वंदन विधि मुनि नित ठानै अगिले पाप षिपावै ॥
ऐसे साधुन के पद पंकज भक्ति भाव उर आनी ।
पूजन करहु दरव आठों तें अरघ तनी विधि ठानी ॥१९॥
ॐ ह्रीं वन्दनावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥१९॥

दोष लगै मन वच तन कोई ताकूं पय विधि काजै ।
सो ही रीति करै उर आनी अपनी सुधता साजै ॥
प्रतिकर्मन तैं भाव शुद्ध करि आलोचन मन आनै ॥
ते हौं साधु नमो सुष काजै ता फल मो अघ भानै ॥२०॥

ॐ ह्रीं प्रतिक्रमणावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

त्याग करै पर वास्ति सकत सम प्रत्याख्यान सुजानो ।
वो विधि असन रसादिक कोई इन आदिक को मानो ॥
नित प्रति या विधि करै सु सवही समता जुत चित ठानै ।
ते गुरु हूं पुजों वसु द्रव्य लै सत्र मित्र येक मानै ॥२१॥

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

तहँ थिति धार तहे जग पीहर ऐसो साहस धारै ।
जो सर ठाम छुड़ायो चाहत कष्ट बहुत विध पारै ॥
तो हू धीर तजै नाहिं आसन आतम रस लपटाये ।
तेहू साधु नमो जुत कर सिर मन वच सीस नमाये ॥२२॥

ॐ ह्रीं कायोत्सर्गावश्यकसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२२॥

पद्धरी छन्द—जो ऊँच नीच भू लपै न कोय।त्रिन पाहन पंड गिनै न कोय॥
सुद्ध भूमि जीव विन सैन लाय।ते साधु जजों उर हरष लाय॥

ॐ ह्रीं भूमिशयनगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२३॥

जे करै न तन आभरन सार। तन गंध लेप त्यागन सुधार ॥
इत्यादि काय ससरुप नांहि। ते मुनिवर वंदों हरष लाहि ॥२४॥

ॐ ह्रीं मंजनत्यागमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२४॥

जे रहै नगन तन मात जात। तिन पै नहिं त्रिन तुस वसन पात
नभ ओढै भूतन तल बिछाय। ते नमो साधु वसु द्रव्य लाय॥२५॥

ॐ ह्रीं वस्त्रत्यागगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

निज कर ते निज सिर केस लेय। चित करुना करि उर धीर जेय॥
तन सोभा तजि मन सुद्ध भाय। ते साधु नमो वसु द्रव्य लाय २६॥

ॐ ह्रीं कचलोचगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चौपाई—येक वार लघु भोजन खाय। रस बिन तथा सहति रस पाय।
भरनो उदर ममत कछु नांहि। ते हू साधु जजों उमगाहि ॥२७॥

ॐ ह्रीं एकभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

येक ठाम थिति भोजन करैं । तन थिर काज राग बिन भरैं ॥
मोक्ष पंथ साधन के काज । ते हू साधु जजों सिव राज ॥२८॥

ॐ ह्रीं स्थितिभुक्तिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥२८॥

सूक्षम जीव दया के काज । दंत धोवन त्यागैं मुनि राज ॥
सकल जंतु बंधू सम जान । ते हू साधु नमो अर्घ आन ॥२९॥

ॐ ह्रीं दंतधावनरहितगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चाल जोगीरासे की—पंच महाव्रत सुमति पांच लपि इंद्री सब वसि आनै ।
आवसि पट भूसैन मंजन तजि वसन त्याग सुभ ठानै ॥
लोचन कच इक वार लघू अन एक ठाम थिति काजैं ।
दंत न धोवन बीस आठ इह साधु सुभग गुन साजैं ॥३०॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिमूलगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ साधुजी की आरती जयमाल ।

दोहा—बीस आठ गुन यह सकल, धरे मोप मग जानि ।

तिनको सुनि व्याख्यान भवि, धारत उपजै ज्ञान ॥१॥

चाल भरथरी की—ते गुरु पूजों भाव सों। जेकरुणा प्रतिपाल।

मुनि दीन दयाल ते गुरु पूजों भावसों ॥ टेक ॥

पंच महाव्रत आदरैं पाचों सुमति समेत।

इंद्री पाचों बसि करैं षट आवासि हेत ॥ ते गुरु पू० ॥२॥

भूमि सयन मंजन तजन पट त्यागी जान।

कच लोचन लघु अनल है अस थिति सुभ आन ॥ तेगुरुपू० ३

दंत धोवन कहूं ना करैं मुनि दीन दयाल।

सव जिय रक्षक हित घनी सहु जग हित पाल ॥ तेगुरुपू०॥४॥

सत्य महाव्रत जे धरैं भाषैं असति न वैन।

त्याग अदत्ता दान को ब्रह चार सु चैन। तेगुरु० ॥५॥

नगन वपू परिग्रह तजै चालैं भूमि निहार।

पाय देषि धर लेय सो जोहूँ ठाम विचार । तें गुरूपू० ॥६॥
मल मूत्रादिक त्याग है सो हू भूमि निहार ।
इंद्री पाचों वसि करै विरकत चित धार । तेगुरूपू० ॥७॥
सपरस इंद्री वसि करै आठो विषय निवार ।
रसना के पाचों विषै त्यागै ममत अहार । तेगुरूप० ॥८॥
गंध तने दोऊ विषै जेर दुखदा जान ।
पांच विषै नेतर तने जीतै सुभ चित आन । तेगुरूपू० ॥९॥
करन विषै तीनों हरै अचित मिश्र सचित ।
कठिन भूमि सोवन वनै सव जीव निमित्त । तेगुरूपू० ॥१०॥
मंजन विधि नहि तन विषै झलकै नस जाल ।
वसन रहित तन सोहनो सुर पूज विसाल । तेगुरूपू० ॥११॥
सिर मुष दाढी कच लुचैं वाधा लहै न कोय ।

एक बार भोजन लघू निर दूषन सोय। तेगुरुपू० ॥१२॥
तन थिति सिव सुख कारनै आन काज न जान।
दंत न धोवैं दया निधि निज सम सब मान। तेगुरुपू० ॥१३॥
ऐसे वीस अरु आठ गुन धारी मुनि कोय।
तिन के पद वसु द्रव्य तैं पूजूँ मन वच होय। तेगुरुपू० ॥१४॥
सोरठा—तन विरकत सिव मिंत, जंतु सकल रक्ष पाल हैं।
निज सुख धारक संत, पूजे तें बहु सुख बढै ॥१५॥
ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसहितसाधुपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥
(इति साधु महाराज की पूजा समाप्त।)

अथ समुच्चय जयमाल (कवित्त छन्द)

जनमत दस दस केवल उपजे, चौदह देव करैं थुति लाय।
अनंत चतुष्टय प्रातिहार्य वसु सब मिलि गुन छयालीस सुथाय ॥

इनको धरै देव सो मोकों भौ भौ सरन होहु सुख दाय ।
सुर नर हरि पूजत अरहंत पद अपनो आतम सुफल कराय ॥१॥
समंत णाण दंसण वीरज गुण सुहमत गुण अवगहन सुजान
अगुरलघू सप्तम गुण जानौ अष्टम अव्याबाध बखान ॥
यह गुण आठ धरे बिन मूरति चेतन अंक सदा सुप दान ।
ऐसे सिद्ध लोक सिर राजै तिन पद "टेक" नमो उर आन ॥२॥
दस लक्षन सुभ धर्म तनें हैं द्वादस भेद कहे तप सार ।
षट आवसि सुभ गुपति तीन लषि पांच भेद जानौ आचार ॥
इह सुभ छत्तीसों गुण धारें आचारज सब जिय हितकार ।
तिनके पद मन वचन काय सुध पूजो भवि सब "टेक" निवार ॥३॥
एकादस अंग ज्ञान धरे उर तिन की रहस सकल पहिचानै ।
चौदह पूरब लही रिद्धि तिन करुना करि उपदेस बखानै ॥

आप पढै शिष्यन पढ़वावै समता भाव राग पद भानै ।
ऐसे गुण को धरै उपाध्या तिन पद "टेक" भजै सिव जानै ॥४॥
पंच महाव्रत समिति पांच गिन इंद्री पांच करै बसि धीर ।
षट आवस्य करै नित ही मुनि ता करि पाप हरै वर वीर ॥
भूमि सयन आदिक गुण सात जु और मिलावो इनके तीर ।
अष्टाविंशाति होय सकल मिलि इन धर साधु करैं सिव सीर ॥५॥
येही पंच गुरु परमेष्ठी येही सकल हितू सुखकार ।
येही मंगल दायक जगमैं येही करै भवो दधि पार ॥
येही पांचों पंचम गति मय ये ही पंच मुकति करतार ।
इनके पदको भव भव सरनों मांगो उर की "टेक" निवार ॥६॥

दोहा-अरहंत सिध आचारके, पाँय उपाध्या पाय ।
साधु सहित पांचों चरन, पूजों "टेक" लगाय ॥७॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यः पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

मंडल विधि ।

प्रथम पाँच कोठे बनाने चाहियें, उन में प्रथक् २ पवित्र गुणों का स्थापन करै । सो इस प्रकार हैं—अर्हन्त जी के ४६, सिद्ध जी के ८, आचार्य जी के ३६, उपाध्याय जी के २५ और साधु जी के २८ ये सब मिलकर एक सो तेंतालीस कोठे बनावें ।

(इति पंचपरमेष्ठि पूजन विधान भाषा समाप्त ।)